P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-7* (Part-2) March- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

प्रेमचंद की कहानियाँ संवेदना और शिल्प

रेखा वर्मा
असिस्टेन्ट प्रोफेसर,
हिन्दी विभाग,
डॉ0 भीमराव अम्बेडकर
राजकीय महिला
स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
फतेहपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

प्रेमचंद हिन्दी साहित्य के गौरव हैं। प्रेमचंद के संपूर्ण साहित्य का केन्द्र उनके साहित्य में व्यक्त आम आदमी की संवेदनशीलता है। प्रेमचंद एक सोद्देश्य रचनाकार हैं। उन्होंने सामाजिक दृष्टि से उपयोगी और हितकर साहित्य की रचना की है। समाज के स्थूल घटनाचक्रों के अन्तराल में सुषुप्त जन आकांक्षा तथा जिजीविषा ही उनकी हर कहानी में विविध रूप रंगों में उभरती है। उन्हें भारतीय सामाजिक व्यवस्था के हर पहलू का गहरा ज्ञान था। आर्थिक विषमता तथा गरीबी के निर्मम प्रहारों से स्वयं आहत थे। उन्होंने गरीबी और शोषण की पीड़ा को खुली आँखों से देखा था। अतः प्रेमचंद ने भारतीय जीवन का कोना–कोना झाँक लिया था। उनकी पैनी दृष्टि से कोई भी यथार्थ टूटने नहीं पाया।

मुख्य शब्द : समसामयिक समस्याएँ, सहानुभूतिपूर्ण दृष्टि समष्टिगत, संप्रेषणीयता, सामाजिक विद्रूपता अमानवीय भावनाएँ, चिरंतन संघर्ष, सभ्यता की क्रूरता, पारिवारिक विघटन।

प्रस्तावना

प्रेमचंद का रचनाकाल भारतीय इतिहास का वह महत्वपूर्ण काल था, जब भारत में सामंतवाद का स्थान पूँजीवाद ले रहा था। महाजनी सभ्यता का उदय हो चुका था। भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन चरम उत्कर्ष पर था और साम्राजवादी क्रांति का प्रभाव राजनीति पर ही नहीं, साहित्य एवं संस्कृति पर भी व्यापक रूप से पड़ रहा था। प्रेमचंद ने आदर्शोन्मुखी यथार्थवाद से अपनी यात्रा प्रारम्भ कर समाजवादी यथार्थवादी तक पहुँच चुके थे। प्रेमचंद युग में भारतीय जनता में जागृति की एक अभूतपूर्व लहर दौड़ गयी थी। भारत की समूची जनता स्वाधीनता के लिए समर यात्रा पर निकल पड़ी थी। उसमें बड़े–बड़े नेता ही नहीं, भारतीय ग्रामीण के मैकू और गंगा जैसे युवक, सेवाराम, भजन सिंह घूरे तथा काले खाँ जैसे अधेड़ और बुढ़िया नोहरी तथा बूढ़े कोदई जैसे लोग भी थे। कथात्मक साहित्य के नाम पर प्रेमचंद के पूर्व जो कुछ लिखा गया था वह या तो कल्पना प्रसूत अंतर्मुखी प्रवृत्तियों का लेखा–जोखा रहा है अथवा समाज सेवा के कृत्रिम अभिनिवेश से प्रेरित उपदेशात्मक वखान रहा है। प्रेमचंद की संवेदनशीलता मनुष्य की बर्हिमुखी प्रवृत्तियों का संघर्ष चित्रित करती रही है।

हिन्दी कहानी साहित्य में प्रेमचंद का आगमन युगान्तकारी हुआ। प्रेमचंद ने कहानी को समाजिक जीवन का दृढ़ आधार प्रदान किया। प्रेमचंद पूर्व कहानियों में जिस कलात्मकता एवं सामाजिक चेतना का अभाव था अब उनमें लेखकीय दृष्टि, लेखन के प्रति ईमानदारी, प्रतिबद्धता और समसामायिक समस्याओं से जूझने की प्रवृत्ति मौजूद होने लगी। उन्होंने अपनी कहानियों की रचना में जनजीवन से प्रेरणा एवं प्रभाव ग्रहण किया कल्पना, मन बहलाव और रहस्य रोमांस की दुनियाँ से उन्होंने कहानी को जनजीवन के यथार्थ के धरातल पर खड़ा किया। सर्वसाधारण के हितों के संघर्ष में उनकी पक्षधरता, उनके विकास और उनकी सुविधा के पक्षपाती समाज की रचना का संकल्प ही प्रेमचंद की परंपरा का सारतत्व है। डॉ0 राजेन्द्र कुमार शर्मा के अनुसार ''साहित्यकार के साहित्यसृजन के पीछे निश्चय ही युगीन परिस्थितियों का बहुत बड़ा हाथ होता है। अगर इसे यूँ कहा जाये कि संवेदनशील साहित्यकार युगीन परस्थितियों के दबाववश ही साहित्य–सृजन की ओर प्रेरित होता है तो अत्युक्ति नहीं है।''[1]

प्रेमचंद का कहानी संसार चिरपरिचित एवं विश्वसनीय है। इसमें ग्रामीण पात्रों के माध्यम से प्रेमचंद ने मनुष्यता की स्थान का प्रयास किया है। उनमें धर्म–रूढ़ियों के प्रति विरोध, मुक्ति की कामना, मानवीय गरिमा के तत्व, सहज व्यंग्य और किसान–मज़दूरों के प्रति सहानुभूतिपूर्ण दृष्टि है। भारतीय समाज के विभिन्न आर्थिक स्तर के लोगों के स्वार्थ पर व्यंग्य के माध्यम से करारी चोट भी की गयी है। इनकी कहानियों का मुख्य बिन्दु समसामयिक संघर्षमय जीवन की पीड़ा है। महान की जगह साधारण की यथार्थपरक स्थापना उनकी कृपा दृष्टि

की विशिष्टता है। एक रचनाकार के रूप में प्रेमचंद में बौद्धिक और रचनात्मक चेतना तथा सक्षमता कहीं ज्यादा है।[2]

रचनात्मकता के मानक–स्तर की दृष्टि से हिन्दी कहानी की पुष्ट परंपरा के आरम्भ का श्रेय प्रेमचंद को ही है। मध्यकालीन इतिहास से लेकर समसामयिक किसान–मजदूर के यथार्थ तक के परिवेश को छूनेवाली उनकी कहानियों की बौद्धिक चेतना और रचना दृष्टि निरंतर विकासशील रही।

डॉ0 इन्द्रनाथ मदन के शब्दों में ''प्रेमचंद उपन्यासकार के नाते तो महान हैं ही कहानीकार के नाते भी महान है।[3] कहानी की मूल संवेदना ही उसका कथ्य है। यह उन व्यक्तिगत या समष्टिगत अनुभूतियों की अभिव्यक्ति है। जिन्हें आज का कहानीकार जीता और भोगता है।[4] संवेदना के कारण लेखक किसी रचना को जन्म देता है। अपने आस–पास की कोई घटना, क्षण या दृश्य से रचनाकार के मन में एक प्रकार का आवेग पैदा करता है। यह तीव्र भावावेश की परिणति ही रचना है। शैलेश मटियानी लिखते हैं, ''बादलों के बनने और बरसने की भी एक पूरी प्रक्रिया होती है। कहानी की प्रक्रिया का इससे भिन्न होना कठिन होगा। दुनियाँ, अगर हम ध्यान से देखे, स्वयं में ही एक संवेदनात्मक सृष्टि है। इसे किसी के द्वारा और किन्हीं के लिए बनाया गया है, इसके पंचभूत ही सारे ज्ञान–विज्ञानों के पंचभूत भी है। कहानी, सृजन के इस नियम से बाहर नहीं है।[5]

लेखक अपनी रचना के लिए अपने परिवेश से सामग्री जुड़ाता है। यह सामग्री प्राथमिक तौर पर कच्चा माल के रूप में होती है। इसमें रचना में परिवर्तित होने तक उसमें लेखक की कल्पना चेतना, निजी अनुभव, बिम्ब, मिथक आदि सभी का समावेश हो जाता है। लेखक यह सोचता रहता है कि उसकी रचना अधिकाधिक संप्रेषणीय बनायी जाय। इसके लिए वह अपनी संवेदना को उपलब्ध की गयी सामग्री से गूथता है। जीवन की जटिलता और संश्लिष्टता से भरे यथार्थ से अपनी रचना के लिए सामग्री जुटाना लेखक की संवेदना पर निर्भर करता है। प्रत्येक कथाकार की अपनी एक जीवन–दृष्टि होती है, उससे उसकी संवेदना बनती है। इसी संवेदना के माध्यम से वह अपने रचना संसार के विभिन्न प्रवृत्तियों की प्रतिष्ठा करता है। प्रेमचंद और प्रसाद ने कहानी के क्षेत्र में दो भिन्न प्रवृत्तियों का प्रतिनिधित्व किया। प्रेमचंद ने जीवन की वास्तविक घटनाओं और समस्याओं को आधार बनाकर कहानी में आदर्श की प्रतिष्ठा की प्रेमचंद एक निश्चित उद्देश्य को लेकर कथा–यात्रा करते हुए दिखाई देते हैं।

प्रेमचंद की कथा संवेदना का केन्द्रीकरण निम्नवर्गीय पात्रों के सुख–दुख आशा–आकांक्षा की अनुभूतियों में दिखाई देता है। घोर यथार्थपरक अनुभूतियों की अभिव्यक्ति करते समय वे अपने आदर्शवादी सिद्धान्तों को भूल जाते है। किसी समस्या के अत्यंत नाजुक पहलू के माध्यम से वे उच्च वर्ग की क्रूरता को कुरेदकर रख देते हैं। सताया हुआ यह वर्ग समाज से अपने को कटा हुआ महसूस करने लगा है। जोखू की आन्तरिक पीड़ा को अति संवेदनशील कलाकार के सिवाय कौन समझ सकता है। ''गरीबों का दर्द कौन समझता है। वे मर भी जाते हैं तो कोई दुआर पर झाँकने नहीं आता कन्धा देना तो बड़ी बात है'' गंगी का विद्रोही दिल रिवाजी पाबन्दियों औ मजबूरियों पर चोट करता हुआ सवर्णों के खोखलेपन को सादोहरण उधेड़ता है। कितनी बड़ी सामाजिक विद्रूपता है।[6]

प्रेमचंद के कथा संसार में मानवीय संवेदनाओं का व्यापक और गहरा विस्तार है। समाज के स्थूल घटना चक्रों के अन्तराल में सुषुप्त जन आकांक्षा तथा जिजीविषा ही उनकी हर कोनों में विविध रूप रंगों में उभरती है। जगत् सृष्टा जैसे असंख्य मानवीय चेहरों की पुनरावृत्ति किये बिना ही सृजित करता है वैसे ही प्रेमचंद समान समस्याओं को नये–नये रूप–रंग में रचते है। कलाकार की बारीकी से उनमें पुनरावृत्ति नहीं होती। प्रेमचंद की दृष्टि आर्थिक विपन्नता के भयावह परिणामों की ओर थी। 'पूस की रात' की मार्मिक वेदना एक गरीब किसान के मजदूर में परिणति हो जाने की विवशता में निहित है। जानलेवा ठंड से बचने के लिए बदबू करते कुत्ते को सीने से लगाने का दृश्य कथाकार की सूक्ष्म पर्यवेक्षण क्षमता तथा गहन अनुभूति को ही प्रमाणित करता है। 'ईदगाह' की संवेदना बाल मनोविज्ञान पर आधारित होने के कारण अधिक प्रभावकारी है।[7]

प्रेमचंद में अद्भुत प्रेक्षण शक्ति थी। उनके मानस दर्पण में मानव–जीवन के विविध संदर्भ विविध परिस्थितियाँ यथावत बिम्बित हो जाती थी उनकी दृष्टि पारदर्शी थी जिसमें समाज और व्यक्ति के बाह्यचित्र ही नहीं अन्तःचित्र भी दृश्य हो जाते है।[8]

प्रेमचंद को भारतीय सामाजिक व्यवस्था के पहलू का गहरा ज्ञान था। कर्ण व्यवस्था की विकृतियों, छूआ–छूत एवं ऊँच–नीच की अमानवीय भावनाओं से उनका हृदय विद्ध था। आर्थिक विषमता तथा गरीबी के निमर्म प्रहारो से स्वयं आहत थे। अनुभूतियों के सर्जनात्मक क्षणों में कारणत्व की संस्थिति में संक्रमण की संवेदना को नकारना अंसभव था।[9]

प्रेमचंद ने गरीबी और शोषण की पीड़ा को खुली–आँखों से देखा था। उन्होंने अपनी सूक्ष्म अनुभूति एवं निरीक्षण क्षमता से 'पूस की रात' के कथा–सूत्र की बनावट की है। प्रस्तुत कहानी के माध्यम से प्रेमचंद ने मानवता के शाश्वत् प्रश्नों को उठाया है। इस कहानी में न कोई बलवती घटना है न संयोग बल्कि मानवता के चिरंतन संघर्ष और तज्जनित प्रतिक्रियाएँ है। मुन्नी कहती है, ''भर–भरकर काम करो, उपज हो तो बाकी दे दो, चलो छुट्टी हुई। बाकी चुकाने के लिए ही हमार जन्म हुआ है। पेट के लिए मजूरी करो। ऐसी खेती से बाज आए मैं रूपए न दूँगी न दूँगी।''[10]

प्रेमचंद नारी की विविध सामाजिक भूमिकाओं उसकी शक्ति तथा उसके सद्गुणों को उजागर करते हैं। किसी भी तरह के शोषण के विरूद्ध उसे खड़ा करते हैं और पुरुष के समकक्ष उसके अधिकारों की वकालत करते हैं। पुरुष में नैतिक बोध तथा मानवीय संवेदना जागृत करने में उसकी अहम भूमिका हो सकती है। अपनी अनेक कहानियों में उन्होंने इसी केन्द्रीय भाव को अंकित किया है। आज भी लेखिकाओं की तरह वे देहमुक्ति और मिथ्या अहंकार के कारण होने वाले पारिवारिक विघटन को

तरजीह नहीं देते हैं। प्रेमचंद को छोड़कर नारी विमर्श करना बिना नीव के भवन बनाने जैसा है। अपने समय की चुनौतियों और समस्याओं के परिप्रेक्ष्य में नारी के संबंध में प्रेमचंद की जो दृष्टि विकसित हुई है वह आज भी प्रासंगिक है।[11]

भावों को व्यक्त करने का सफल माध्यम भाषा है। कहानी भी साहित्य का एक रूप है अतः स्वभावतः एक भावात्मक सर्जना ही होगी। समस्त अनुभूतियों का व्यक्तीकरण सशक्त भाषा के माध्यम से ही हो सकता है। प्रेमचंद को भाषा पर असाधारण अधिकार था अतः अपने पात्रों के अनुकूल उन्होंने भाषा को ढाला और उसे अपने ढ़ंग से प्रस्तुत किया। प्रेमचंद की कहानियों की श्रेष्ठता का राज उनके भाषा प्रयोग में निहित है। अनुभव कितना प्रमाणिक हो भाव का आवेग कितना ही प्रकार हो जब तक भाषा उन्हें तद्रूप अभिव्यक्त नहीं करती तब तक रचना का अपेक्षित संघात नहीं होगा। प्रेमचंद की भाषा भावानुगामिनी तो है ही अनुभूति की सूक्ष्मता एवं प्रबलता की भी सशक्त संवाहिका है।

वास्तव में हिन्दी कथा–साहित्य को कथ्य और शिल्प दोनों दृष्टियों से नया आयाम प्रदान करने वाले प्रेमचंद ही है। प्रेमचंद की दृष्टि में साहित्य का उद्देश्य केवल मनोरंजन नहीं अपितु वह जीवन की समस्याओं पर भी विचार करता है और उन्हें हल करता है। प्रेमचंद के सभी पात्र जिस–जिस वर्ग से संबंध रखते है, उनकी भाषा का रूप भी वैसा ही है।

अध्ययन का उद्देश्य

मनुष्य भी परिवार, समाज और स्वयं से संबंधित अनेक समस्याएँ होती है इन समस्याओं के सुलझाने में वह तत्पर रहता है। मानवीय संवेगों, अनुभूतियों, प्रवृत्तियों, मनोवृत्तियों तथा मन के चेतन–अचेतन में घटित भाव संचारों के सूक्ष्मतम रहस्य को उद्घाटित करना अध्ययन का उद्देश्य है।

अध्ययन की आवश्यकता

उपर्युक्त विषयक अध्ययन वर्तमान समय में अति आवश्यक है अध्ययन से हमें प्रेमचंद की कहानियों में जो राजनीतिक और सामाजिक गतिविधयाँ अंकित की गयी है उनमें किस तरह संवेदनशीलता को जीवन्त रखना है ये दर्शाया गया है। यथार्थ जीवन का अनुभव व्यक्ति के निजत्व की परिधि में आकार अधिक सवेद्य हो गया है अपनी परिस्थिति विशेष में जन्मते पात्रों के प्रति पाठकीय सहानुभूति आश्रित करने में अब भी ये कहानियाँ यथावत् सक्षम है।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध में प्रेमचंद की कहानियों में वर्णित समस्याओं का अध्ययन किया गया। उनकी समीक्षा व विश्लेषण के उपरांत निष्कर्ष प्रस्तुत किया गया।

निष्कर्ष

प्रेमचंद के कथा–साहित्य की संरचना तत्कालीन जीवन की गतिविधियों हलचलों, मूल्यों एवं मान्यताओं के परिप्रेक्ष्य में हुई है। प्रेमचंद को गरीबी, शोषण, और आर्थिक विषमता की अनुभूति थी। उन्होंने उसी अनुभूति की प्रेरणा से अपनी कहानियों के कथा–सूत्र को गढ़ा। अपनी कहानियों के माध्यम से प्रेमचंद ने यह सिद्ध करके दिखा दिया कि हमारी सारी समस्याओं की तरह इस शोध–पत्र में ध्यान आकर्षित करने का मेरा प्रयास रहा है।

अंत टिप्पणी

1. *प्रेमचंद परंपरा की कहानियों में परिवारिक और सामाजिक चित्रण, डॉ0 राजेन्द्र कुमार शर्मा, पृ0– 37.*
2. *यशपाल और हिन्दी कहानी की विरासत–अध्याय–एक।*
3. *प्रेमचंद : एक विवेचन– डॉ0 इन्द्रनाथ मदान, पृ0– 122*
4. *हिन्दी कहानी कथ्य और शिल्प, डॉ0 शिवशंकर पाण्डेय, पृ0–84.*
5. *वागार्थ संपा–विश्रय बहादुर सिंह अप्रैल 1996, पृ0 48.*
6. *प्रेमचंद की कहानी संवेदना और शिल्प, डॉ0 रामकिशोर शर्मा, पेज–19–20*
7. *वही, पेज– 20*
8. *वही, पेज– 22*
9. *वही, पेज– 38*
10. *पूस की रात, प्रेमचंद।*
11. *प्रेमचंद की कहानी संवेदना और शिल्प, डॉ0 राम किशोर शर्मा, पेज–75*